राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019–20
10वीं कक्षा
हिंदी
मॉडल पेपर 6

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड–अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

भारत एक विशाल देश है। यहाँ धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत पर चलकर ही एकता बनाए रखी जा सकती है। यदि प्रशासन अपने नागरिकों को समभाव से नहीं देखता, उनमें भेदभाव करता है, तो सांप्रदायिक द्वेष बढ़ेगा ही। तुष्टिकरण की नीति राष्ट्र के लिए घातक है। सांप्रदायिकता बहुसंख्यक वर्ग की हो अथवा अल्पसंख्यक वर्ग की, दोनों से कठोरतापूर्वक निपटा जाना चाहिए। कुछ लोग बहुसंख्यक समाज की सांप्रदायिकता को तो कुचलने की बात करते हैं परंतु अल्पसंख्यकों की सांप्रदायिकता को सांप्रदायिकता ही नहीं मानते। इस प्रकार का दृष्टिकोण राष्ट्र–निर्माण में सहायक नहीं हो सकता। धर्मनिरपेक्षता को सुदृढ़ करने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि धर्म और राजनीति को अलग किया जाए। भारत का अधिकतर मतदाता अशिक्षित है जो धार्मिक अपील में बहकर ही प्रायः मतदान करता है। यह स्वस्थ राजनीति का लक्षण नहीं है।

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर :
गद्यांश का उचित शीर्षक– **धर्म और राजनीति**

2. भारत में किस प्रकार के सिद्धांत पर चलकर एकता बनाए रखी जा सकती है? 1

उत्तर :
भारतवर्ष में धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत पर चलकर ही एकता बनाए रखी जा सकती है।

3. सांप्रदायिकता से क्यों कठोरपूर्वक निपटा जाना चाहिए? 2

उत्तर :
सांप्रदायिकता की भावना से देश कमज़ोर होता है, इसलिए इससे कठोरता से निपटा जाना चाहिए।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मैं नही चाहता चिर सुख
चाहता नहीं अविरल दुख,
सुख–दुख की आँख–मिचौनी
खोले जीवन अपना मुख।

सुख–दुख के मधुर मिलन से
यह जीवन हो परिपूरन,
फिर घन से ओझल हो घन।

जग पीड़ित है अति दुख से
जग पीड़ित है अति सुख से,
मानव जग में बंट जावें
दुख–सुख से औ सुख–दुख से।

अविरत दुख है उत्पीड़न,
अविरत सुख भी उत्पीड़न
सुख–दुख की निशा–दिवा में
सोता जागता जग–जीवन।

4. कवि चिर सुख या चिर दुख क्यों नहीं चाहता है? 1

उत्तर :
दोनों मिलकर ही जीवन को पूर्ण बनाते हैं इसलिए कवि चिर सुख या चिर दुख नहीं चाहता है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

5. कवि मानव के लिए किस स्थिति की कामना करता है? 1

उत्तर :
कवि मानव के लिए दुख और सुख परस्पर बंट जाएं ऐसी कामना करता है।

6. इस काव्यांश में प्रमुख भाव है 2

उत्तर :
इस काव्यांश में प्रमुख भाव संतुलन है।

खण्ड–ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. खेलों का जीवन में महत्व
   (क) प्रस्तावना
   (ख) खेलों के प्रकार
   (ग) खेलों द्वारा चरित्र निर्माण
   (घ) राष्ट्र के महान् खिलाड़ी पुरुष
   (ङ) खेलों से प्राप्त शिक्षाएँ
   (च) उपसंहार
2. समाचार पत्रों के लाभ तथा हानियाँ
   (क) प्रस्तावना
   (ख) समाचार–पत्र के लाभ
   (ग) व्यापार वृद्धि में योगदान
   (घ) नौकरी प्राप्त करने में समाचार–पत्रों की भूमिका
   (ङ) समाचार–पत्र की हानियाँ
   (च) उपसंहार
3. यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता
   (क) प्रस्तावना
   (ख) सुरक्षा एवं विकास
   (ग) सामाजिक समरसता
   (घ) उपसंहार
4. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता
   (क) लोकदेवता का आशय
   (ख) प्रमुख लोकदेवताओं का संक्षिप्त परिचय
   (ग) लोकदेवता के जनहितकारी कार्य
   (घ) लोकदेवता और लोक–आस्था
   (ङ) उपसंहार

उत्तर :

1. खेलों का जीवन में महत्व

(क) **प्रस्तावना –** जीवन में स्वास्थ्य का सबसे अधिक महत्व होता है। स्वस्थ मानव ही धरती पर विद्यमान सुखों को भोग सकता है। विजय उसके चरण चूमती है। स्वस्थ व्यक्ति ही साहस एवं धैर्य से सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है। यह स्वस्थ जीवन प्राप्त होता है खेलों से। नियम से खेलने वाले व्यक्ति में आत्म–विश्वास और कार्य करने की शक्ति व्याप्त रहती है।

(ख) **खेलों के प्रकार–** हमारे देश में खेलों के अन्तर्गत फुटबॉल, हॉकी, वालीबॉल, क्रिकेट, कबड्डी, कुश्ती, खो–खो, पोलो, तैराकी, घुडसवारी, लम्बी कूद और हर प्रकार की दौड़ें आती हैं। इनके द्वारा शारीरिक एवं मानसिक शक्ति में वृद्धि के साथ–साथ मनोरंजन भी होता है। वास्तव में देखा जाए तो खेल–कूद और व्यायाम हमारी शक्ति के साधन हैं। जो इन स्त्रोतों के अनुयायी रहते हैं, वे सदैव शक्तिशाली, चुस्त और आरोग्य रहते हैं। आलस्य उनसे कोसों दूर रहता है। खेलों से शरीर में रक्त की गति तीव्र रहती है, जिससे पाचन–शक्ति ठीक रहती है। सम्पूर्ण शरीर सुडौल और मजबूत हो जाता है। पुट्ठे शक्तिशाली हो जाते हैं, नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है। मन उल्लास से भरा रहता है।

(ग) **खेलों द्वारा चरित्र निर्माण–** खेलों द्वारा न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को लाभ प्राप्त होता है, अपितु मानसिक स्वास्थ्य को भी लाभ होता है। खेलों द्वारा हमारे बौद्धिक विकास में भी सहायता मिलती है। इसके साथ–साथ खेलों द्वारा हमारे चरित्र का निर्माण होता है। इनके द्वारा हमारे मन से बुरें विचार या भावनाएँ स्वतः ही दूर हो जाती हैं। खेलों द्वारा आपसी सहयोग की भावना उत्पन्न होती है। खिलाड़ी में आत्म–संयम, आत्म–विश्वास, दृढ़ निश्चय, हानि को सहन करने की क्षमता तथा विजयी होने का निश्चय आदि अनेक गुण उत्पन्न होते हैं, जिनके उसके उत्तम चरित्र का परिचय प्राप्त होता है।

(घ) **राष्ट्र के महान् खिलाड़ी पुरुष–** हमारे देश के महान पुरुष सदा अच्छे खिलाड़ी रहे हैं। यहाँ ऐसे वीरों की अनेक गाथाएं प्रचलित हैं। धनुर्धारी राम, हनुमान, परशुराम, भीम, अर्जुन, अभिमन्यु और श्रीकृष्ण का नाम सुनकर किसकी भुजाएँ न फड़क उठेंगी। उन्होंने व्यायाम, ब्रह्मचर्य और शक्ति–पूजा से ही अचल कीर्ति प्राप्त की है। पृथ्वीराज चौहान के शब्द–भेदी बाण, अकबर बादशाह की घुड़सवारी और स्वामी रामतीर्थ की तैराकी तथा व्यायाम की प्रवृत्ति से कौन अपरिचित हैं? स्वामी दयानन्द सरस्वती में शक्ति और स्वास्थ्य का चरमोत्कर्ष हुआ था। राष्ट्रपिता गाँधी जी को भ्रमण में तथा जवाहरलाल नेहरू की तैरने में रुचि थी।

(ङ) **खेलों से प्राप्त शिक्षाएँ–** खेलों से हमें अनेक शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं। खेलसंघर्ष द्वारा विजय प्राप्त करने की भावना पैदा करते हैं। खेल हँसते–हँसते अनेक कठिनाइयों का सामना करना सिखाते हैं। खेल के मैदान में खिलाड़ी में अनुशासन में रहने की भावना उत्पन्न होती है। एक–दूसरे को सहयोग देने और भाई–चारे की भावना भी खेलों से मिलती है।

(च) **उपसंहार–** संक्षेप में कहा जा सकता है कि खेल–कूद मानव–जीवन का अभिन्न अंग है। जो लोग खेलों के महत्व को नहीं समझते, वे जीवन के महान सुख को प्राप्त करने में पीछे रह जाते हैं। विद्यार्थियों को खेलों में अवश्य भाग लेना चाहिए, क्योंकि खेलों में भाग लेने से उनका शरीरिक और मानसिक विकास होगा तथा चरित्र का निर्माण भी होगा। मनुष्य को दीर्घ आयु के लिए व्यायाम या खेलों का अनुसरण अवश्य करना चाहिए।

2. समाचार–पत्रों के लाभ तथा हानियाँ

(क) **प्रस्तावना –** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। समाज में मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। विज्ञान ने यदि मनुष्य को अपना दास बनाया है तो सारी वसुधा को एक कुटुम्ब भी बना दिया है। समाचार–पत्रों के द्वारा मनुष्य समस्त वसुधा की जानकारी प्राप्त करता है। समाचार–पत्र ज्ञान में वृद्धि करने का सबसे सस्ता, सरल और प्रमुख साधन है। भारत जैसे विशाल देश में विचारों

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

के आदान-प्रदान के लिए समाचार-पत्र भी विशेष भूमिका निभाते हैं। समाचार-पत्र देश की रीढ़ की हड्डी होते हैं। किसी भी देश को कमजोर एवं शक्तिशाली बनाने में समाचार-पत्रों की विशेष भूमिका होती है। वर्तमान युग में समाचार-पत्र प्रजातंत्र का आधार-स्तम्भ हैं, उसके जागरूक प्रहरी हैं। समाचार-पत्र जनजीवन की गतिविधियों का दर्पण हैं। भारत में सर्वप्रथम 1780 में कलकत्ता में एक पत्र प्रकाशित हुआ। उसके पश्चात् राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ भारत में पत्रकारिता का भी प्रचार होता गया।

(ख) **समाचार-पत्र के लाभ-** मानवीय कौतूहल एवं जिज्ञासा को शांत करने में समाचार-पत्र विशेष भूमिका निभाते हैं। देश-विदेश की घटनाओं की जानकारी प्राप्त करके मानव आत्म-संतुष्टि अनुभव करता हैं। शासकीय, व्यापारिक एवं खेलकूद के समाचार भी मनुष्य समाचार-पत्रों से प्राप्त करता है। समाचार-पत्रों से ही मनुष्य सरकारी आज्ञा, निर्देश और सूचनाओं को जानता है। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा सम्पूर्ण-संसार की गतिविधियों की जानकारी भी मानव को समाचार-पत्रों से ही मिलती है।

(ग) **व्यापार वृद्धि में योगदान-** आधुनिक युग में व्यापारिक उन्नति भी समाचार-पत्रों पर ही निर्भर है। व्यापार मंडियों के भाव, शेयरों आदि के उतार-चढ़ाव की जानकारी भी मनुष्य को समाचार-पत्रों से मिलती है। समाचार-पत्र लाखों, करोड़ों के हाथों में पहुँचते हैं और वस्तु के विक्रय में सहायता करते हैं। यह लोकतंत्र का प्रहरी है।

(घ) **नौकरी प्राप्त करने में समाचार-पत्रों की भूमिका-** नौकरी के लिए कहाँ-कहाँ स्थान खाली हैं, इसकी जानकारी भी समाचार-पत्रों के माध्यम से मिलती हैं। इस प्रकार समाचार-पत्र के विज्ञापन बेरोजगार युवाओं को उनके भविष्य की जानकारी करवाते हैं। इसके साथ ही यह लाखों हॉकरों को रोजी-रोटी देते हैं, कहानियाँ, चुटकुले, लेख, व्यंग्य आदि छापकर यह मनुष्य के मनोरंजन का साधन भी बनता है। इसके अतिरिक्त समाचार-पत्र सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक अंधविश्वासों को दूर करने में भी विशेष भूमिका निभाते हैं।

(ङ) **समाचार-पत्र की हानियाँ-** संसार में लाभ-हानि का चोली-दामन का संबंध है। समाचार-पत्रों से जहाँ लाभ हैं, वहाँ कुछ हानियाँ भी हैं। पीत-पत्रकारिता, मन गढ़न्त और झूठे समाचार, किसी राजनीतिक दल की गलत विचारधारा का प्रचार और अंधानुकरण आदि देश को गर्त की और ले जाते हैं। अश्लील विज्ञापन बच्चों पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

(च) **उपसंहार-** समाचार-पत्र का मुख्य उद्देश्य मनुष्य के समक्ष सत्य घटनाओं को प्रदर्शित करना होना चाहिए। विशिष्ट ज्ञानवर्द्धक सामग्री प्रस्तुत करना ही इसका उद्देश्य होना चाहिए। इसे पढ़ने से मनुष्य के संकीर्ण विचार दूर होकर उसे उदार बनाते हैं। सभी देशों की घटनाएँ पढ़ने से मानव में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना जागृत होती है। समाचार-पत्र समाज में जागृति लोन, युवकों को देश-भक्ति और बलिदान की प्रेरणा देने एवं समाज में नारी की स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता

(क) **प्रस्तावना -** व्यक्ति कल्पनाशील प्राणी है और प्रत्येक व्यक्ति अपने सुनहरे भविष्य की कल्पना करता रहता है। हमारे देश में लोकसभा के चुनावों में सफल रहने वाले बड़े दल के नेताओं में प्रधानमंत्री बनने की होड दिखाई देती है। मैं भी कल्पना करता हूँ कि यदि मैं चुनाव में जीतकर लोकसभा का सदस्य बन जाता और सभी प्रतिनिधि मुझे देश का प्रधानमंत्री चुन लेते तो कितना अच्छा होता। वैसे भी देश का प्रधानमंत्री होना सौभाग्य एवं गौरव का विषय होता है। मैं प्रधानमंत्री बनता तो देश का शासन जनता की आकाक्षाओं के अनुसार चलाने की प्रगति का नया मार्ग प्रशस्त करता।

(ख) **सुरक्षा एवं विकास-** यदि मैं प्रधानमंत्री होता तो अपने राष्ट्र की सुरक्षा एवं विकास के लिए इन लक्ष्यों को प्राथमिकता देता-

1. मैं देश की आर्थिक उन्नति के लिए प्रयास करता। इसके लिए ऐसी नीतियाँ बनाता, ताकि स्वावलम्बी भारत का निर्माण संभव हो सकता।
2. मैं देश में शिक्षा के स्तर में सुधार करता, रोजगारपरक तकनीकी शिक्षा पर अधिक जोर देता, ताकि नवयुवक पढ़-लिखकर स्वरोजगार चला सकें।
3. मैं आतंकवाद को जड़ से मिटाने का प्रयास करता तथा सीमा पर शत्रुओं के युद्ध को पूरी तरह से रोकता।
4. मैं देश में फैले हुऐ भ्रष्टाचार, कुशासन, गरीबी, आर्थिक विषमता, कालाबाजारी, मिलावटखोरी एवं अन्य सभी बुराइयों को जड़ से मिटाने का सम्पूर्ण प्रयास करता।

(ग) **सामाजिक समरसता-** मैं युवा पीढ़ी को स्वावलम्बी बनाने, स्वरोजगार उपलब्ध कराने, बेरोजगारी से मुक्त करने, देश सेवा की भावना रखने तथा नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहने के लिए प्रोत्साहित करता। समाज में जाति-पाति, ऊँच-नीच एवं वर्ग-भेद को समाप्त करने के साथ लोगों में भाईचारा स्थापित करने की योजनाएँ बनाता।

मैं प्रधानमंत्री होता तो देश के बुजुर्गों के आदर-सम्मान का ध्यान रखकर ऐसे उपाय करता कि उनका शेष जीवन स्वस्थ एवं सुखमय व्यतीत हो, उन्हें कोई परेशानी का सामना न करना पड़े और वे देश के नवयुवकों के लिए आदर्श प्रेरणा-स्त्रोत बने रहें।

(घ) **उपसंहार-** इस प्रकार यदि मैं प्रधानमंत्री होता, तो स्वतंत्र भारत के नव निर्माण में अपना तन, मन और जीवन समर्पित करता। जनभावनाओं के अनुसार देश की चहुँमुखी प्रगति के उपाय सम्पूर्ण शक्ति से करता।

4. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता

(क) **लोकदेवता का आशय-** ऐसे महापुरुषों को स्थानीय जनता द्वारा लोकदेवता माना जाता है, जो मानव रूप में जन्म लेकर भी जनता की भलाई के अनोखे कार्य करते हुए अपना जीवन समर्पित करते हैं तथा देवताओं के अंश की तरह प्रतीक रूप में पूजे जाते हैं। ये लोकदेवता-देवी-देवता की चमत्कारी शक्ति से परिपूर्ण होते हैं तथा इनकी समाधियों या स्थानों पर मेले आदि लगते हैं।

(ख) **प्रमुख लोकदेवताओं का संक्षिप्त परिचय-** राजस्थान के प्रमुख लोकदेवताओं में बाबा रामदेव, गोगाजी, देवनारायणजी, तेजाजी, पाबूजी, भौमियाजी, डूँगजी, जवाहरजी, कल्लाजी, हड़बूजी, देवबाबाजी, केसरियाजी, झूंझारजी, बिग्गाजी आदि की विशिष्ट मान्यता है। रामदेवजी जैसलमेर जिले के पोकरण के पाय रुणीचा गाँव में रहते थे। इस स्थान को रामदेवरा और रामदेवजी को

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

रामसा पीर कहते हैं। मारवाड़ के पाँच पीरों में गोगाजी का नोहर में गोगामेड़ी मेला भरता है। देवनारायणजी गुर्जर जाति के लोकदेवता हैं, उनका पूजा–स्थल आसींद तथा देवधाम जोधपुरिया है। तेजाजी सारे राजस्थान में पूज्य हैं, नागौर जिले के परबतसर में इनका मेला भरता है। पाबूजी का फलौदी के कोलू गाँव में, देवबाबा का भरतपुर के नगला जहाज में, हड़बूजी का भूंडेल (नागौर) में, भौमियाजी का सारे राजस्थान के भूमिरक्षक देव के रूप में, झूंझारजी का सीकर के इमलोहा कस्बे में तथा बिग्गाजी का जांगल क्षेत्र में मेला भरता है।

(ग) **लोकदेवता के जनहितकारी कार्य–** विभिन्न लोकहितकारी एवं जनरक्षक चमत्कारी कार्य करने से लोकदेवताओं की पूजा की जाती है। रामदेवजी ने जाति–पांति, छुआछूत आदि का विरोध कर हिन्दु–मुस्लिम एकता स्थापित की। गोगाजी ने रणभूमि में प्राणो का बलिदान किया, ये सर्पदंश का अचूक उपचार करते थे। तेजाजी कृषि कार्यों के उपकारक थे। देवनारायणजी ने गोबर और नीम का औषधि रूप में अत्यधिक महत्व बताया। हड़बूजी और बिग्गाजी गौ–रक्षक थे। पाबूजी गायों एवं ऊँटों के रक्षक थे। इनमें से कई लोकदेवता गायक भी थे। इनकी **वाणियाँ, पड़** या **फड़** आज भी लोक–जीवन में आस्था के साथ गाये जाते हैं।

(घ) **लोकदेवता और लोक–आस्था–** राजस्थान में विभिन्न स्थानों, अंचलों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में लोकदेवता की मान्यता परम्परानुसार चल रही है। ये लोकदेवता अपने चमत्कारी कार्यों से जनता के रक्षक रूप में माने जाते हैं। इसी कारण लोकजीवन में इन पर विशेष आस्था है। प्रत्येक लोकदेवता के जन्म–दिवस अथवा समाधि–स्थल पर निश्चित मास–तिथि–वार को मेले लगते हैं और बड़ी आस्था से इनका पूजन एवं यात्राओं–जुलूसों का आयोजन होता है। इनके **पदों** और **वाणियों** का गायन भी होता है। तथा रात्रि–जागरण भी किया जाता है।

(ङ) **उपसंहार–** राजस्थान के ग्रामीण जीवन में लोकदेवताओं पर घनिष्ठ आस्था दिखाई देती है। इसी से यहाँ प्रतिवर्ष अनेक मेले–उत्सव आदि के आयोजन पूरी श्रद्धा से किये जाते हैं। इनका लोकमंगल की भावनाओं से गहरा संबंध है।

8. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, ग्वालियर छावनी का छात्र नमन मानते हुए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को शैक्षिक भ्रमण का आयोजन करने के लिए एक प्रार्थना–पत्र लिखिए। 4

उत्तर :

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
ग्वालियर छावनी।

विषय : शैक्षिक भ्रमण के आयोजन हेतु प्रार्थना–पत्र।

महोदय,

जैसा कि सभी जानते है कि शैक्षिक भ्रमण प्रत्यक्ष ज्ञानार्जन का महत्वपूर्ण साधन और शिक्षा का अद्वितीय माध्यम है। शैक्षिक भ्रमण के द्वारा प्रकृति के मनोरम वातावरण में छात्र पाठ्यपुस्तकों में वर्णित सामग्री को सहज ही हृदयंगम करने में सफल होंगे। भ्रमण के इसी महत्त्व को देखते हुए उर्दू के मशहूर शायर गालिब ने कहा था–
सैर कर दुनिया की गालिब, जिन्दगानी फिर कहाँ?
जिन्दगानी जो रही तो, नौजवानी फिर कहाँ?

मान्यवर, विद्यार्थी जीवन ही शैक्षिक भ्रमण का उपयुक्त समय होता है। अतः मेरा अनुरोध है कि इस सत्र में दीपावली अवकाश के समय शैक्षिक भ्रमण का आयोजन कर हम सब छात्रों का उपकृत करें।

हमें विश्वास है कि आप यथाशीघ्र भ्रमण की कोई योजना बनाकर छात्रों को अवगत करवाने का श्रम करेंगे।

सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी छात्र,
नमन
कक्षा–10

दिनांक : 10 सितम्बर, 2018

अथवा

8. स्वयं को रतन मानते हुए अपने क्षेत्र के पुलिस अधिकारी को मोहल्ले में आए दिन होने वाली चोरियों की शिकायत करते हुए एक पत्र लिखिए। 4

उत्तर :

प्रतिष्ठा में,
श्रीमान् पुलिस अधिकार महोदय,
जिला कोतवाली– क, ख, ग।

विषय : मोहल्ले में आए दिन होने वाली चोरियों की रोकथाम हेतु।

महोदय,

निवेदन है कि मैं गणगौरी बाजार में राजा शिवदीन जी के रास्ते में रहता हूँ। हमारे मोहल्ले में पिछले एक माह से आए दिन दो–तीन घरों में चोरियाँ हो रही हैं और चोर अभी तक पकड़े नहीं जा सके हैं। उनके पास अनेक घातक हथियार भी हैं। अतः जाग हो जाने पर भी हम उनका सामना करने में समर्थ नहीं हैं। परिणामस्वरूप मोहल्ले में रहने वाले नागरिक अत्यधिक भयभीत और आशंकित हैं।

अतः अनुरोध है कि रात्रि के समय पुरानी बस्ती में गश्त की विशेष व्यवस्था की जाए और हमारे इलाके में हो रही चोरियों पर सख्ती से नियंत्रण किया जाए तथा अब तक हुई चोरियों का यथाशीघ्र पता लगाकर प्रभावित व्यक्तियों को राहत प्रदान की जाए।

आशा है, आप इस विषय में अतिशीघ्र उचित कार्यवाही कर अनुगृहीत करेंगे।

निवेदक/विनीत,
रतन
म. नं. 2052, राजा
शिवदीन जी का रास्ता,
पुरानी बस्ती, जयपुर।

दिनांक : 10 जनवरी, 2018

खण्ड–स

9. मालादीप खाना खाकर पढ़ने बैठ गई। वाक्य में कौनसी क्रिया है? उसकी परिभाषा लिखिए। 2

उत्तर :

वाक्य में पूर्वकालिक क्रिया है। **परिभाषा–** जब मुख्य क्रिया से पूर्व कोई अन्य क्रिया होती है, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। इसमें प्रायः **कर** या **करके** प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

10. निम्नलिखित कर्तृवाच्यों को कर्मवाच्यों में बदलिए– 3

1. निरालाजी ने कई कविताएँ लिखीं।
2. शीला कपड़े धो रही है।
3. सोहन ने मोहन का स्वागत किया।
4. वह खुद को चतुर समझता है।
5. राम परीक्षा में प्रथम आया।
6. आराधना कल खेलने जाएगी।

उत्तर :

1. निरालाजी द्वारा कई कवितायें लिखी गईं।
2. शीला द्वारा कपड़े धोये जा रहे हैं।
3. सोहन द्वारा मोहन का स्वागत किया गया।
4. उसके द्वारा खुद को चतुर समझा जाता है।
5. राम द्वारा परीक्षा में प्रथम स्थान पाया गया।
6. आराधना द्वारा कल खेलने जाया जाएगा।

11. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह कर उनमें निहित समास का नाम लिखिए– 2

1. गुणहीन
2. यथाशक्ति

उत्तर :

1. **गुणहीन–** गुणो से हीन–तत्पुरूष समास।
2. **यथाशक्ति–** शक्ति के अनुसार– अव्ययीभाव समास।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. मेरी माँ गुणवान है।
2. राम बड़ा चालाक है।

उत्तर :

1. मेरी माँ गुणवती है।
2. राम बहुत चालाक है।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. रस लेना
2. चेहरे की हवाइयाँ उड़ना

उत्तर :

1. रस लेना
   अर्थ– आनंद लेना
   वाक्य प्रयोग– बच्चों ने कार्टून फिल्म का बहुत रस लिया।
2. चेहरे की हवाइयाँ उड़ना
   अर्थ– घबरा जाना
   वाक्य प्रयोग– जब समीर चोरी करते हुए पकड़ा गया तो उसके चेहरे की हवाइयाँ उड़ गईं।

14. आँख का अंधा नाम नयन सुख। इस लोकोक्ति का अर्थ, वाक्य–प्रयोग द्वारा बताइये। 1

उत्तर :

आँख का अंधा नाम नयन सुख – गुणो के विरुद्ध नाम होना
वाक्य प्रयोग– हमारी कक्षा का होशियार सिंह पढ़ने में बिलकुल बुद्धू है। ठीक ही कहा है आँख का अंधा नाम नयन सुख।

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

विमल इन्दु की विशाल किरणें,
प्रकाश तेरा बता रही हैं।
अनादि तेरी अनन्त माया,
जगत को लीला दिखा रही हैं।
प्रसार तेरी दया का कितना,
ये देखना है तो देखे सागर।
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे,
तरंग–मालाएँ गा रही हैं।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित **प्रभो** शीर्षक कविता से लिया गया है। इसमें कवि ने ईश्वर या परमात्मा की स्तुति करते हुए उसकी व्यापकता, सौंदर्य, दया आदि गुणों का उल्लेख किया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि हे प्रभो! चन्द्रमा की निर्मल एवं विशाल किरणें चारों तरफ फैलकर तुम्हारे प्रकाश का परिचय दे रही हैं, तुम्हारी शक्ति एवं व्यापकता को सिद्ध कर रही हैं। वे किरणें यह दिखा रही हैं कि ईश्वर की माया अनादि और अनन्त है तथा संसार की लीला की भी यही स्थिति है अर्थात् ईश्वर की लीला कहाँ और कब प्रारम्भ हुई एवं कितनी असीम है, यह सब कोई नहीं जानता है।

ईश्वर की कृपा का फैलाव कितना फैला हुआ है, ऐसा यदि देखना है तो समुद्र का विस्तार देखना चाहिए अर्थात् समुद्र के व्यापक विस्तार के समान ईश्वर की दया का प्रसार है तथा समुद्र की लहरों की असंख्य कतारें ईश्वर की प्रशंसा का राग गा रही हैं, ईश्वर की सर्वश्रेष्ठता के गीत गा रही है।

विशेष–

1. स्तुति रूप में ईश्वर की अनादि–अनन्त स्थिति तथा अत्यन्त व्यापक प्रसार का आस्थामय वर्णन किया गया है।
2. भाषा तत्सम–प्रधान एवं भावाभिव्यक्ति गंभीर है। इसमें लयात्मकता और गेयता सुन्दर है।
3. अनुप्रास, काव्यलिंग एवं रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ हैं।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

तुम्हारा स्मित हो जिसे निरखना,
वो देख सकता है चन्द्रिका को।
तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ,
निनाद करती ही जा रही हैं।
विशाल मन्दिर की यामिनी में,
जिसे देखना हो दीपमाला।
तो तारकागण की ज्योति उसका,
पता अनूठा बता रही है।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित **प्रभो** शीर्षक कविता से लिया गया है। इसमें कवि ने चाँदनी एवं नदियों की कलकल ध्वनि आदि के माध्यम से ईश्वर की व्यापकता को देखने का सन्देश दिया है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

व्याख्या– कवि जयशंकर प्रसाद कहते हैं कि हे प्रभो! जिसे तुम्हारी मधुर मुस्कान देखनी हो, वह चाँदनी को देख सकता है और जिसे तुम्हारे हँसने की ध्वनि सुननी है, वह नदियों की कलकल ध्वनि को सुने अर्थात् चाँदनी परमेश्वर की मुस्कान जैसी है तथा नदियों की कलकल ध्वनि उसकी हँसने की ध्वनि जैसी है।

कवि कहते है कि रात्रि में जिसे इस विश्व रूपी विशाल मन्दिर में दीपकों की कतार देखनी हो, वह रात में चमकते हुए तारों को देखे, क्योंकि तारों की ज्योति में उसे ईश्वर की सत्ता का पता मिल जाता है, उसकी अनुपम छवि का बोध हो जाता है।

विशेष–

1. कवि ने ईश्वर की मुस्कान, मधुर हँसी एवं सुसज्जित मन्दिर आदि के लिए सुन्दर उपादान प्रस्तुत किये हैं।
2. प्राकृतिक उपादानों से ईश्वर की सौंदर्यमयी सृष्टि एवं भव्य रूप की व्यंजना की गई है।
3. अनुप्रास, काव्यलिंग, रूपक एवं परिकर अलंकार प्रयुक्त है। भाषा तत्सम–प्रधान एवं गीतात्मक लय–गति द्रष्टव्य है।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

गुमान– (गुस्से से) झूठे! क्या तुमने राज्य की जनता को नहीं उकसाया? क्या तुम लोगों ने दर्जी सत्याग्रह नहीं कराया? क्या तुमने हड़तालें और भूख हड़तालें नहीं कराईं? क्या तुमने क्रान्तिकारी कविताएँ नहीं लिखीं? क्या तुमने जैसलमेर के किले पर तिरंगा झंडा लहराने की घोषणा नहीं की। क्या तुम लोगों ने नहीं कहा कि महारावल को नजराना भेंट नहीं करेंगे? क्या तुम लोगों ने संकल्प नहीं किया कि महारावल के सामने सिर नहीं झुकाएँगे? बोल ..... बोल ..... तुम लोगों ने यह सब किया या नहीं।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक के **अमर शहीद** शीर्षक एकांकी से लिया गया है। इसके लेखक लक्ष्मीनारायण रंगा हैं। सागरमल स्वतंत्रता सेनानी हैं। वह जैसलमेर जेल में कैद हैं। पुलिस अधीक्षक गुमानसिंह रावलोत उसको राज्य का गद्दार कहता है तथा क्रोध के आवेश में उसको बताता है कि उसने जैसलमेर सियासत के विरुद्ध क्या–क्या अपराध किए हैं।

व्याख्या– गुमानसिंह ने क्रोध व्यक्त करते हुए सागरमल से कहा कि उसने राज्य की प्रजा को विद्रोह के लिए प्रेरित किया है। उसने ताजियों का झगड़ा और दर्जी सत्याग्रह कराया है। उसने लोगों से भूख हड़तालें तथा हड़तालें कराई हैं। उसने क्रान्ति की घोषणा करते हुए कविताएँ लिखी हैं। उसने घोषणा की है कि जैसलमेर किले पर तिरंगा झंडा लहरायेगा। उसने लोगों को भड़काया है कि वे महारावल को तोहफा भेंट नहीं करें। उसने अपने साथियों के साथ महारावल के सामने सिर न झुकाने की प्रतिज्ञा की है। तमाम आरोप लगाने के बाद गुमानसिंह ने सागरमल से पूछा कि वह बताएं कि क्या उसने ये अपराध नहीं किये हैं।

विशेष–

1. स्वतंत्रता सेनानी सागरमल पर राज्य तथा उसके शासक के विरुद्ध बगावत करने का दोष लगाया गया है।
2. संवाद की भाषा प्रवाहपूर्ण है। प्रश्न शैली का प्रयोग हुआ है।
3. संवाद से गुमानसिंह का गुस्सा और आवेश प्रकट हुआ हैं।
4. संवाद **अमर शहीद** की कथावस्तु के विकास में सहायक है।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

सागर– (हँसकर) आवाज कभी मरती नहीं जेलर साहब! मेरी आवाज का यदि गला घोंटा गया, तो वह जनता की आवाज बन जाएगी और जनता की आवाज कभी दब नही सकती, कभी मर नहीं सकती। (सोचकर) फिर शहीदों की जिंदगी तो लुप्त गंगा की तरह होती है जेलर साहब! जो कहीं भी, किसी भी धरातल को फोड़कर बह निकलती है। उसे कोई जंजीर, कोई जेल, कोई दीवार, कोई परकोटा बाँध नहीं सकता।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित **अमर शहीद** शीर्षक एकांकी से लिया गया है। इसके रचयिता लक्ष्मीनारायण रंगा हैं। सागरमल तर्कपूर्ण शैली में स्वतंत्रता के प्रति अपने संघर्ष को सही साबित करता है और उस पर दृढ़ता से चलना चाहता है। जेलर उसकी बातों को जुनून की बातें कहता है। वह बताता है कि वह काल कोठरी में पड़ा मर जाएगा। उसकी आवाज दबा दी जाएगी।

व्याख्या– जेलर की बात सुनकर सागरमल हँस पड़ता है। वह कहता है कि आवाज मरती नहीं, वह अमर होती है। यदि सागरमल को मार दिया गया और उसकी आवाज को दबाया गया तो वह जनता की आवाज बन जाएगी, तब जनता स्वतंत्रता की माँग उठाएगी। उसकी आवाज दबाई नहीं जा सकेगी। जनता की आवाज कभी मरती नहीं है। कुछ सोचकर वह पुनः कहता है कि शहीदों का जीवन लुप्त हो गई गंगा नदी के समान होता है। नदी कहीं–कहीं लुप्त हो जाती है, लेकिन मौका पाकर वह किसी अन्य स्थान पर फूट पड़ती है और प्रकट हो जाती है। शहीद की मृत्यु के बाद भी उसका समर्पण नहीं मरता। किसी अन्य स्वतंत्रता सेनानी के रूप में वह जाग उठता है। शहीद की आवाज अमर होती है। उसको न जंजीर से बाँधा जा सकता है और न जेल में बंद किया जा सकता है। उसको चाहरदीवारी, कोई जेल की दीवार रोक नहीं सकती। इन सब कठिनाइयों से सामना कर वह जन–जन तक पहुँच जाती है।

विशेष–

1. सागरमल कहता है कि स्वतंत्रता के लिए उसकी पुकार को रोका नहीं जा सकता।
2. शहीद की आवाज सभी बाधाओं को तोड़कर जनता की आवाज बन जाती है।
3. सरल, प्रवाहमयी तथा ओजपूर्ण भाषा का प्रयोग हुआ हैं।
4. शैली तर्कप्रधान है।

17. प्रभो! कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। 6

उत्तर :

प्रभो! जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित उनकी प्रारम्भिक कविताओं में से एक है, जो उनके कविता–संग्रह कानन कुसुम में संकलित है। इस कविता में कवि ने ईश्वर की स्तुति करते हुए उसकी सर्वव्यापकता सौन्दर्य और शक्तिमत्ता का गुणगान किया है। कवि को प्रकृति के प्रत्येक उपादान में ईश्वर का आनन्द प्रसाद दिखाई देता है। निर्मल चन्द्रमा की किरणें ईश्वरीय प्रकाश को ही व्यक्त करती हैं। जीवन का कार्यकलाप उस नित्य परमात्मा की अंत रहित माया को दिखाता है। सागर की उत्ताल तरंगें उसी की स्तुति करती हैं। सागर में उठने वाली तरंग मालाएँ उसी की प्रशंसा के गीत गाती हैं। चन्द्रिका उसकी मुस्कान को तथा नदियों की कल–कल ध्वनि उसी के आह्लाद को व्यक्त करता है। इस विराट विश्व में रात्रि के समय प्रकाशित होने वाले नक्षत्र और उल्कापिण्ड उसी के प्रकाश को महसूस कराते हैं। वस्तुतः प्रकृति के सौंदर्य और प्रेम से

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

युक्त भव्य रूप को प्रकाशित करने वाला ईश्वर ही है। सूर्य की किरणें ही प्रकृति को जीवन देती हैं। इस असीम उपवन का माली परमात्मा ही है। पृथ्वी बराबर यह बताती रहती है। ईश्वर दया के सागर हैं। उनकी दया अथवा कृपा होने पर ही मनुष्य के सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। यह बात प्रकृति का प्रत्येक उपादान और सद्ग्रन्थ पुकार-पुकार कर कहते हैं, जिससे हमारे हृदय में भी यह आशा जाग्रत होती है कि कभी तो उस दया सागर की कृपा हमारे ऊपर भी अवश्य होगी।

अथवा

17. प्रभो! कविता की भाषा की विशेषताएँ बताइए? 6

उत्तर :

प्रभो! कविता जयशंकर प्रसाद के कविता संग्रह **कानन कुसुम** में संकलित है। इससे पूर्व प्रसाद जी ब्रज भाषा में काव्य-रचना किया करते थे। लेकिन **कानन कुसुम** तक आते-आते प्रसाद जी की भाषा में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। कवि ब्रज भाषा से खड़ी बोली की ओर उन्मुख हुआ। प्रभो! कविता की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। इसकी शब्दावली तत्सममयी है, जिससे कविता में अद्भुत अभिव्यंजना सौष्ठव की अभिव्यक्ति हुई है। लयात्मकता, सरसता और मौलिकता की दृष्टि से भी यह कविता उत्तम कोटि की है। इसमें प्रकृति के विभिन्न उपादानों का सुन्दर चित्रण हुआ है। अनुप्रास, रूपक और मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

18. ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से रचना का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए। 6

उत्तर :

ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से निबंध में रामधारी सिंह दिनकर ने मानव-मन के सबसे बुरे एवं भयानक भाव को चित्रित किया है। वस्तुतः ईर्ष्या का उदय व्यक्ति के चरित्र की कमजोरी एवं दुराशाओं से होता है। जिस व्यक्ति का चरित्र जितना कमजोर होता है, वह उतना ही अधिक ईर्ष्याग्रस्त तथा निन्दा करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति को अपने पास सब सुख-साधन उपलब्ध रहने पर भी उसे सुख का आनन्द नहीं मिलता है, अपितु वह दूसरों के पास मौजूद साधनों को देखकर उससे ईर्ष्या करता है। इस तरह वह मन की कमजोरी का शिकार हो जाता है, उसके जीवन मूल्यों और चरित्र का अंत हो जाता है।

प्रस्तुत निबंध का मूल भाव ईर्ष्यालु प्रवृत्ति को मानव-मन एवं चरित्र का अवगुण बताना है। साथ ही ईर्ष्यालु प्रवृत्ति को त्यागने का संदेश देकर ईर्ष्यालु लोगों से बचने के तरीके बताना है। ईर्ष्या को त्यागने से मानसिक शांति मिलती है, अनायास वेदना नहीं होती है और समाज में दूसरे लोगों से अपनेपन का भाव जागता है। ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों की निन्दा में ग्रस्त रहता है, अतः इसका त्याग तभी हो पाता है, जब ईर्ष्या एवं द्वेष का अन्त हो। इस प्रकार प्रस्तुत निबंध में इन दोषों से बचने के लिए उपाय सुझाये गए हैं।

अथवा

18. मोहन राकेश के साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय दीजिए। 6

उत्तर :

नयी कहानी आंदोलन के अग्रणी कथाकार मोहन राकेश का जन्म सन् 1925 में अमृतसर में तथा निधन सन् 1972 में दिल्ली में हुआ। पहले लाहौर से फिर पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर ये अध्यापन कार्य से जुड़े रहे। कुछ वर्षों तक कहानी की प्रसिद्ध पत्रिका **सारिका** का सम्पादन किया। मोहन राकेश बहमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उन्होंने भारतीय और पश्चिमी नाट्य-शैली को जोड़कर हिन्दी में एक नयी शैली का सूत्रपात किया। **आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस** तथा **आधे अधूरे** इनके चर्चित नाटक हैं।

कथाकार के रूप में मोहन राकेश का नाम स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् नए लेखकों में अग्रणी है। इन्होंने कहानी-विधा को नया रूप देने का विशेष प्रयास किया। **अंधेरे बंद कमरे**, **अन्तराल** तथा **न आने वाला कल** आदि। इनके उपन्यास हैं, तो **इंसान के खण्डहर, नये बादल, एक और जिंदगी, फौलाद का आकाश** तथा **जानवर और जानवर** आदि इनके कहानी-संग्रह हैं। इन्होंने **परिवेश** और **बकलम** खुद शीर्षक-कृतियों में अपनी आलोचनात्मक-क्षमता व्यक्त की है तो **आखिरी चट्टान** तक यात्रा-वृत्तान्त से अपने अनुभवों के संस्मरण उपस्थित किये हैं। कम जीवन-काल पाकर भी मोहन राकेश ने अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को यशस्वी बनाया। इन्हें संगीत नाटक अकादमी से पुरस्कार सम्मान प्राप्त हुआ।

19. लक्ष्मण-परशुराम संवाद की भाषा की विशेषताएँ बताइए। 2

उत्तर :

तुलसी रससिद्ध कवि हैं। उनकी काव्य-भाषा रस की खान है। रामचरितमानस में उन्होंने अवधी भाषा का प्रयोग किया है। इसमें चौपाई-दोहा शैली को अपनाया गया है। उनकी भाषा सरल, सुबोध और मुहावरेदार है। उसमें यथा-स्थान लोकोक्तियों और सूक्तियों का भी प्रयोग हुआ है, जिसके कारण उनकी भाषा सजीव, प्रवाहपूर्ण और प्रभावशाली बन गई है।

20. कवि ने किस प्रकार के नगर की अपेक्षा निर्जन वन में रहना अच्छा बताया है? 2

उत्तर :

कवि के अनुसार जिस नगर में गुण-अवगुण को न कोई देखता है, न समझता है, जहाँ मत्स्य न्याय चलता हैं, कमजोर को बलवान और गरीब को धनवान सताते हैं, जहाँ गुण-दोष की जाँच न करके खली और गुड़ का एक ही मूल्य समझा जाता है और दोनों एक ही भाव बिकते हैं, जहाँ भेड़-बकरी सभी को एक ही लाठी से हाँका जाए, ऐसी अन्धेर नगरी में रहने की अपेक्षा निर्जन वन में रहना अच्छा है।

21. ग्रीष्म ऋतु में कृषकों की कैसी स्थिति बताई गई है? 2

उत्तर :

भारत एक कृषि-प्रधान देश है। यहाँ की कृषि मानसून का जुआ कहलाती है। ग्रीष्म ऋतु में वर्षा का विलम्ब कृषकों को हताश और निराश कर देता है। पृथ्वी के गर्भ से धन को हरने वाले उनके खेतों की माटी पत्थर के समान कठोर हो जाती है। उनकी आशाओं पर तुषारापात हो जाता है। वे मन ही मन ग्रीष्म को दुर्वचन कहने और गालियाँ देने लगते हैं।

22. ईदगाह कहानी में पुलिस को लेकर बच्चों ने जो धारणाएँ प्रकट कीं, उनका उल्लेख कीजिए। 2

उत्तर :

मेले में जाते समय पुलिस लाइन के पास पहुँचते ही सभी बच्चे पुलिस के बारे में बातें करने लगे। बच्चों ने पुलिस के बारे में दो धारणाएँ व्यक्त

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

कीं। एक धारणा तो यह थी कि पुलिस वाले जनता की रक्षा के लिए परिश्रम करते हैं। यदि वे पहरा न दें तो चोर परेशान कर डालें, चोरियाँ होने लगें। दूसरी धारणा यह थी कि पुलिस वाले चोरों से मिले रहते हैं, उनके कारण ही चोरों में चोरी करने का हौसला बढ़ जाता है।

23. मन में केवल हिन्दसों की चरखी चलती रही। इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर :

एक कान्वेण्ट की बस होटल के अहाते में आकर रुकी। उसमें बैठी लड़कियाँ समुद्र के सितारे का लक्ष्य कर अंग्रेजी में एक गीत गा रही थी। उस समय लेखक का मन एक ओर तो गीत सुनने में लगा हुआ था, दूसरी ओर उसे सुबह की बस से जाना था। इसलिए वह सोच रहा था कि पहली बस, दूसरी बस, तीसरी बस का समय क्या-क्या है। जब गीत के स्वर विलीन हो गए, तब उसके मन में बसों के समय-चक्र की ही चरखी चलती रही।

24. सड़क पर कोई दुर्घटना होने पर हमारा क्या कर्तव्य बनता है? 2

उत्तर :

दुर्घटना स्थल से बचकर निकलने की जगह घायलों की सहायता करना हमारा कर्तव्य है।

25. ईश्वर की प्रशंसा का राग कौन गा रहा है? 1

उत्तर :

ईश्वर की प्रशंसा का राग सागर में लगातार उठने वाली हिलोरें (तरंगें) गा रही हैं।

26. प्रकृति-पद्मिनी के अंशुमाली से कवि का क्या तात्पर्य है? 1

उत्तर :

प्रकृति-पद्मिनी के अंशुमाली पंक्ति से कवि का तात्पर्य है कि वह ईश्वर प्रकृति-रूपी कमलिनी को खिलाने वाला या विकसित करने वाला सूर्य है अर्थात् ईश्वरीय प्रकाश से प्रकृति का सौंदर्य खिल उठता है। अतः वह सूर्य रूपी ईश्वर ही प्रकृति रूपी कमलिनी के सौंदर्य को बढ़ाता है।

27. ईर्ष्या सबसे पहले किसको जलाती है? 1

उत्तर :

ईर्ष्या सबसे पहले उसी मनुष्य को जलाती है, जिसके मन में वह पैदा होती है। ईर्ष्यालु प्रवृति का व्यक्ति स्वयं ही ईर्ष्या का शिकार होता है।

28. लेखक ने भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान किसे बताया है? 1

उत्तर :

उस चट्टान को जो तीन सागरों के संगम-स्थल पर है और जिस पर कभी स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगाई थी।

29. प्रभो कविता का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। 4

उत्तर :

महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित प्रभो कविता के काव्य-सौंदर्य या कलात्मक विशेषताओं को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

1. **कविता का भावपक्ष-** प्रस्तुत कविता में कवि ने आस्था का स्वर व्यक्त किया है। कवि ने ईश्वर को इस सृष्टि का रचयिता, पालक एवं रक्षक बताया है तथा उसके सौंदर्य एवं प्रेमयुक्त स्वरूप को स्पष्ट करते हुए संसार पर सदा दया करने वाला निरूपित किया है। अन्त में कवि ने ईश्वर को सभी के मनोरथों को पूरा करने वाला बताकर अपनी आस्था एवं विश्वास की अभिव्यक्ति की है। भक्ति-आस्था की दृष्टि से इस कविता का भावपक्ष अत्यधिक सुन्दर है।
2. **कलापक्ष-** कवि जयशंकर प्रसाद ने इसमें छायावादी शैली अपनाकर प्रकृति के प्रत्येक उपादान को रूपक एवं मानवीकरण द्वारा ईश्वर का व्यक्त रूप बताया है। इसमें भाषा संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली है और अलंकारों का प्रयोग हुआ है। कविता में लय-तुक का पूरा निर्वाह किया गया है। इसमें कल्पनाशीलता के साथ मधुरता, लालित्य एवं व्यंजना आदि का सुन्दर समावेश हुआ है। इस दृष्टि से यह लघु-कविता कलात्मक-सौंदर्य की सभी विशेषताओं से मण्डित दिखाई देती है।

30. रामधारी सिंह दिनकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय दीजिए। 4

उत्तर :

राष्ट्रीय-सांस्कृतिक धारा के कवि तथा राष्ट्रकवि रूप में विख्यात रामधारी सिंह **दिनकर** का जन्म बिहार प्रान्त के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। पटना विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त कर पहले शिक्षक, फिर बिहार सरकार के सब-रजिस्ट्रार, प्रचार विभाग के उपनिदेशक तथा मुजफ्फरपुर कॉलेज में प्राध्यापक रहे। सन् 1952 में सरकारी नौकरी त्यागकर राजयसभा के सदस्य बने, फिर सन् 1963 में भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बने। दिनकरजी भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार भी रहे।

समाज-राष्ट्रीय चेतना और ओज एवं क्रांति के ओजस्वी कवि रामधारी सिंह दिनकर बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। इन्होंने गद्य व पद्य दोनों में पर्याप्त साहित्य की रचना की। इनकी प्रमुख काव्य-कृतियों के नाम हैं- **रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, सामधेनी, सीपी और शंख, दिल्ल, बापू , परशुराम की प्रतीक्षा** आदि। **संस्कृति के चार अध्याय** इनकी श्रेष्ठ गद्य-रचना है। **अर्द्धनारीश्वर** आदि इनके विचारात्मक निबंधों की रचना है। **मगध-महिमा** इनका गीतिनाट्य है। दिनकरजी की प्रायः सभी रचनाओं में ओज, पौरुष एवं क्रांति का स्वर प्रकट हुआ है। कुछ रचनाओं में सौंदर्य-चेतना, प्रगतिशीलता एवं विचारात्मकता भी स्पष्ट दिखाई देती है। राष्ट्रीय चेतना के विकास में इनका प्रयास प्रशंसा योग्य है।

****

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।